-: ओ३म् :-

कक्षा - X (CBSE)

Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

प्रथमः पाठः

!! शुचिपर्यावरणम् !!

(शुद्ध - पर्यावरण)

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम् ।
शुचि - पर्यावरणम् ॥
महानगरमध्ये चलदहर्निशं कालायसचक्रम् ।
मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम् ॥
दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनत्रसनम् । शुचि...

अन्वय :- अत्र जीवितम् दुर्वहम् जातं प्रकृतिः एव शरणम् । शुचि पर्यावरणम् (भवेत्) । महानगरमध्ये अनिशं चलत् कालायसचक्रम् मनः शोषयत् तनुः पेषयद् सदा वक्रम् भ्रमति अमुना दुर्दान्तैः दशनैः जनत्रसनम् न एव स्यात् ।

श्लोक का अर्थ - यहाँ जीवन कठिन हो गया है । प्रकृति ही शरण है । पर्यावरण शुद्ध हो । महानगरों में दिन - रात चलता हुआ लोहे का पहिया यानि यातायात के साधन मन को सुखाता हुआ, शरीर को पीसता हुआ, सदा टेढ़ा घूमता है । इन भयानक दाँतों से मानव का विनाश

> Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

नहीं हो।

कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।
वाष्पयानमाला संध्यावति वितरन्ती ध्वानम्॥
यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्।
शुचि---॥२॥

अन्वयः - शतशकटीयानम् कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति। ध्वानम् वितरन्ती वाष्पयानमाला संध्यावति। हि यानानां अनन्ताः पङ्क्तयः संसरणं कठिनम्।

श्लोक का अर्थ - सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ काजल सा मलिन यानि काला धुआँ छोड़ती हैं, कोलाहल बिखेरती हुई, रेलगाड़ी की पंक्ति छोड़ती है, गाड़ियों की अनन्त पंक्तियों में चलना कठिन है।

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्॥
करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्
शुचि---॥३॥

Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

अन्वयः - हि भृशं दूषितं वायुमण्डलं निर्मलं जलं न, कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं, समलं धरातलम् बहिः करणीयम् जगति अन्तः तु बहु शुद्धिकरणम् ।

श्लोक का अर्थ - निश्चय ही अत्यधिक दूषित वायुमण्डल है, निर्मल जल भी नहीं है। कुत्सितवस्तु से मिश्रित भोज्य पदार्थ है, गन्दगी से युक्त धरती को दूर करना चाहिए, संसार में अन्दर अधिक शुद्धि करनी चाहिए।

- कदाचित् कालं नय मामस्मान्नगराद् बहुदूरम् ।
प्रपश्यामि ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयःपूरम् ॥
एकान्ते कान्तारे क्षणमपि मे स्यात् सञ्चरणम् ।
शुचि--- ॥4॥

अन्वयः - अस्मात् नगरात् बहुदूरम् कदाचित् कालं माम् नय। ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयःपूरम् प्रपश्यामि। एकान्ते कान्तारे क्षणम् अपि मे सञ्चरणम् स्यात् ।

Scanned by TapScanner

> Date

☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat

श्लोक का अर्थ - इस नगर में बहुत दूर कुछ समय के लिए मुझे ले जाओ। गाँव की सीमा पर जरने, नदी और जलाशय देखता हूँ। क्षणभर भी एकान्त वन में मेरा संचार हो अथवा चलना हो।

● हरितत्रणां ललितलतानां माला रमणीया।
कुसुमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया॥
नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्।
शुचि---॥5॥

अन्वयः - मे हरितत्रणां ललितलतानां माला रमणीया। समीरचालिता कुसुमावलिः वरणीया स्यात्। नवमालिका रसालं रुचिरं संगमनम् मिलिता।

श्लोक का अर्थ - मेरे हरे पेड़ों की सुन्दर लताओं की रमणीय माला चुनने योग्य है। हवा से चलाई गई यानि हिली हुई फूलों की पंक्ति हो, मिली हुई नवमालिका और आमों का सुन्दर संगम है।

Scanned by TapScanner

Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

आर्य चल बन्धो! खगकुलकलरव गुञ्जित वनदेशम्।
पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम्
चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम्।
श्रुचि---॥6॥

अन्वयः- आर्य बन्धो! खगकुलकलरव गुञ्जितवनदेशम् चल। पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम्, चाकचिक्यजालं जीवितरससहरणम् नो कुर्यात्।

श्लोक का अर्थ- अरे बन्धु! पक्षियों के समूह की ध्वनि से गुञ्जित वन प्रदेश में चल। नगर के शोर से भ्रमित लोगों के लिए सुख सन्देश को धारण करो। चकाचौंध भरी दुनियाँ को जीवन के रस का हरण नहीं करना चाहिए।

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टाः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा॥
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्।
श्रुचि---॥7॥

> Date

☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat

अन्वयः - प्रस्तरतले लतातरुगुल्माः पिष्टाः नो भवन्तु। पाषाणी सभ्यता निसर्गे समाविष्टा न स्यात्। मानवाय जीवनं कामये जीवन् मरणम् न।

श्लोक का अर्थ - लता वृक्ष और झाड़ी पत्थरों के तल में न पिसें, पाषाणी सभ्यता प्रकृति में समाविष्ट न हो। मानव के लिए जीवन की कामना चाहता हूँ ना कि जीते हुए मरण।

-: हानि :-